International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 10 Issue 3, May-June, 2022, Impact Factor: 7.326

एक पत्रकार के रूप चौधरी छोटूराम का योगदान : एक अध्ययन

डॉ. बलजीत सिंह

Journalisms & Mass Communication

सारांश :–

चौधरी छोटूराम अपने समय के विशेषरूप से पंजाब और उत्तर भारत के बहुर्चित व्यक्ति रहे है। चौधरी साहब के समय पंजाब (संयुक्त पंजाब) का आर्थिक ढ़ांचा असंतुलित था। इस अर्थ व्यवस्था में एक ओर किसान वर्ग दूसरी ओर व्यापारी वर्ग था। किसान मजदूर वर्ग जनसंख्या में बहुत अधिक था और दूसरा वर्ग (व्यापारी वर्ग) जनसंख्या में बहुत अल्प परंतु अर्थ बल में बहुत शक्तिशाली था। इसी अर्थबल शक्ति के कारण किसानों का निर्दयता पूर्ण अत्याचार और शोषण होता था। वास्तव में किसान की मुक्ति का इतिहास ही चौधरी साहब के जीवन का इतिहास है। चौधरी साहब समाचार पत्रों की शक्ति को भलि–भांति समझते थे। इस लिए उन्होंने अपने आंदोलनों का आधार भी समाचार पत्र को ही रखा। उन्होनें आंदोलन के आरंभ में ही 'जाट गजट' समाचार पत्र (उर्दू साप्तिाहिक) का आरंभ सन् 1916 में किया। पत्र के संपादकीय और लेख मालाओं ने शासक वर्गो की नींव को हिला दिया।

मुख्य शब्द :– चौधरी छोटूराम, पत्रकारिता और योगदान आदि।

उद्देश्य :– चौधरी छोटूराम के पत्रकारिय पक्ष को उजागर करना।

शोध विधि :– ऐतिहासिक एवं व्याख्यात्मक विधि और द्वितीय आंकड़ों का उपयोग किया गया है।

विस्तार :–

कांग्रेस के इतिहास में राजा रामपालसिंह का वही स्थान है जो उससमय के प्रसिद्ध नर्मदलीय नेताओं का था। वे पंडित मदनमोहन मालवीयके साथियों में थे। उस समय के ऐसे देशभक्तों में वे अग्रणी थे जिनकेगुणों पर प्रजा और शासक दोनों ही मुग्ध थे। ऊँचे अंग्रेज अधिकारियों के साथ भी उनका सम्पर्क था। विद्वानों का मान औरदीन–दुखियों के प्रति दया उनके स्वभाव में बसी हुई थी। उनके यहाँ एकअच्छा पुस्तकालय और वाचनालय था जिनमें अनेक अखबार आते थेऔर अच्छी पुस्तकों का संग्रह होता रहता था। राजा साहिब तो विद्याव्यसनीथे ही, छोटूराम जी को भी अखबार और पुस्तकें पढ़ने का चस्काविद्यार्थिकाल से ही लगा हुआ था। यहाँ काम भी उनके पास अधिक नथा। राजा साहब कालाकांकर से अंग्रेजी और हिन्दी में दो साप्ताहिकनिकालते थे, नाम दोनों का ' हिन्दुस्तान' था। अंग्रेजी हिन्दुस्तान के सम्पादनके लिये उन्होंने स्कॉटलैंड निवासी श्री 'फरनियर' को रखा हुआ था,उसका पद सहायक सम्पादक का था ।

छोटूराम जी अंग्रेजी 'हिन्दुस्तान' के लिये लिखने लग गये। उनमेंनिबन्ध लिखने की योग्यता तो पहले से ही थी, राजा साहिब को उनके लेख बहुत पसन्द आये और फिर तो कभी–कभी सम्पादकीय लेख व टिप्पणियां चौधरी छोटूराम से लिखवाते थे। कालाकांकर से विदा होकर चौधरी साहिब आगरा पहुंचे। भरतपुर के राजा सूरजमल जाट ने मुगलों के कमजोरहोने पर आगरे के किले पर कब्जा कर लिया था। उनका लड़का जवाहरसिंहटिप्पणियाँ छोटूराम जी से ही लिखाने लगे।

जाट गजट का प्रारम्भ

चौधरी छोटूराम ने सोचा कि अंग्रेज द्वारा परिवर्तित मताधिकार की प्रक्रिया को औौर रोहतक जिले की सामाजिक और आर्थिक स्थिति को देखते हुए जाटों को एक शक्तिशाली राजनैतिक इकाई के रूप में संगठित करना चाहिए। बीसवीं सदी के प्रारम्भिक दो दशकों में प्रायः सम्पूर्ण भारत में सभो जातियां बड़े विस्तार के साथ अपनी–अपनी जातियों को संगठित करने के प्रयास में लगी हुई थीं। इसी सन्दर्भ में चौधरो छोटूराम ने भो सर्वप्रथम जिला रोहतक में और इसके बाद सम्पूर्ण पंजाब में जाटों को गतिशील बनाकर संगठित करने का प्रयास किया। इस उद्देश्य के लिए उन्होंने तत्कालीन सभी साधनों का प्रयोग किया। इन साधनों में चौधरी छोटूराम को सबसे सशक्त साधन समाचार पत्र प्रतीत हुधा । चौधरी छोटूराम की प्रारम्भ से हो समाचार पत्रों में रुचि रही थी। स्कूल के प्रारम्भिक वर्षों में वे ''पंसा'' नामक समाचार पत्र को पढ़ते थे। इसके बाद कॉलेज के दिनों में दिल्ली में रहते हुए वे समाचार पत्रों से पधिक जुड़ गये। कालेज के दिनों में हो विपिनचन्द्रपाल द्वारा चलाई गई पत्रिका के लिए वे लेख लिखते थे। इसके अतिरिक्त ऐसा कहा जाता है कि ''डम्पीरियल फोर्टनाईट'' पत्रिका के लिए वे सामाजिक घोर राजनतिक लेख लिखते थे। संस्कृत के प्रोफेसर रघवरदयालके मना करने पर ही उन्होंने विवादास्पद लेख लिखने बन्द किये। जब 1907 ई० में सेंट स्टीफन कालेज ने ''स्टोफियन'' नामक पत्रिका आरम्भ को तो इसके प्रवेशांक के लिए सी० एफ० एण्ड्रज के कहने पर 'दी इम्प्रूवमेंट घाफ इण्डियन विलेज लाईफ'' (भारतीय ग्राम्य जीवन में सुचार) नामक लेख लिखा।

कालाकांकर में रहकर राजा रामपालसिंह के यहां नौकरी करते हुए चौधरी छोटूराम ने राजा साहब द्वारा संचालित ''हिन्दोस्तान'' नामक समाचार

पत्र के सम्पादन में सहायता करते हुए यह अनुभव कर लिया था कि विचारों के प्रचार के लिए समाचार पत्र बड़े महत्त्वपूर्ण होते हैं। प्रतः उन्होंने जाटों की सामाजिक, आर्थिक और राजनंतिक स्थिति को सुधारने के लिए 'जाट गजट' नामक उर्दू साप्ताहिक निकालने का निश्चय किया। चौधरी लालचन्द के साथ सम्मिलित रूप में वकालत करते समय इनको आय एक हजार रुपये से अधिक नहीं थो इस घाय से घर का खर्चा निकालकर समाचार पत्र को चलाना बड़ा कठिन कार्य था। परन्तु दृढ़निए यी लोगों की सहायता भगवान करता है और इसी समय उनके परमहिषी मातनहेल गांव के राय साहेब चौधरी कन्हैयालाल उनके पास आगये। चौधरी साहेब ने समाचारपत्र आरम्भ करने की योजना उनके सामने रखी। यह योजना कन्हैयालाल को अच्छी लगी और उन्होंने उसके लिए चौधरी साहेब को पन्द्रह सौ रुपए दे दिए। इस प्रकार सन् 1916 ई० में 'जाट गजट' आरम्भ हो गया। आरम्भ में स्वयं चौधरी छोटूराम इसके सम्पादक रहे। परन्तु अपनी व्यस्तताओं के कारण उन्हें अनुभव हुआ कि अखबार के सम्पादन का कार्य किसी अन्य व्यक्ति को सौंपा जाए। चौधरी छोटूराम ने पं० सुदर्शन को सम्पादक का काम दे दिया। पं० सुदर्शन प्रागे जाकर हिन्दी साहित्य में प्रमचन्द–परम्परा के प्रसिद्ध कहानीकार बने। परन्तु जिलाधीश उनसे किसी कारणवश नाराज रहता था अतः वे ''जाट गजट'' छोड़कर स्वयं चले गए। इस नाराजगी का कारण राजेन्द्र जिज्ञासु के अनुसार यह था कि ''पं. सुदर्शन प्रार्यसमाजी विचारधारा के व्यक्ति थे धीर चौधरी छोटूराम ने उन्हें प्रार्यसमाजी होने के कारण ही अपने समाचारपत्र का सम्पादक नियुक्त किया था। एक दिन सुदर्शन 'जाट गजट' के कार्यालय में जारहे थे। मार्ग में एक पादरी लोगों को ईसा का उपदेश देते हुए, हिन्दू धर्म पर प्रहार कर रहा था। यह बात सुदर्शन को घखरी धौर वे वैदिकधर्म और ईसाई धर्मध्मत की तुलना पर भाषण देने लगे। इस घटना का समाचार अंग्रेज जिलाधीश के पास पहुंचा। उसने 'जाट गजट' की जमानत जब्तकरके नई जमानत मांग ली। जब इस बात का पता चौधरी साहेब को लगा तो वे चौधरी लालचन्द को साथ लेकर जिलाधीश से मिले और कहा कि विश्वयुद्ध में तोपों के सामने लड़नेवाले हम हैं और जमानत भी हमारे ही अखबार की जब्त हो, यह क्या अंधेर है। जिलाधीश ने कहा या तो अपना सम्पादक बदलो, अन्यथा नई जमानत जमा करवानी पड़ेगी। सम्पादक को क्यों हटाया जाये ? यह पूछने पर जिलाधीश ने पादरी वाली घटना चौधरी साहेब को बता दी। यह बात सुनकर चौधरी साहेब ने कहा कि मैं सम्पादक को बिल्कुल नहीं बदलूंगा।

इस घटना की प्रामाणिकता में राजेन्द्र जिज्ञासु ने लिखा है कि उपर्युक्त घटना सुदर्शन जी की पत्नी ने उन्हें सुनाई थी। पं० सुदर्शन को चौधरो साहेब ने इसलिए ही सम्पादक बनाया हो कि वे आर्यसमाजी थे, पूर्णरूप में

ठीक नहीं है। वस्तुतः चौधरी साहेब ने 'सर्वहितकारी' समाचारपत्र दिनांक 21 फरवरी, 1989 दयानन्दमठ, रोहतक उनकी उर्दू भाषा को पकड़ और लेखन शैली की विशेषता के कारण ही उनको सम्पादक बनाया था। पं० सुदर्शन के उपरान्त पं विशम्बरनाथ शर्मा सज्जर वासे इसके सम्पादक बनाए गए ये चौधरी साहब के कट्टर विरोधी पं० श्रीराम शर्मा के पिता थे और समाज भी नहीं थे। इन दोनों सम्पादकों के समय में भी सम्पादकीय लेख प्रायः चौधरी छोटूराम ही लिखा करते थे। इनके पश्चात् तीसरे सम्पादक चौधरी मोलसिंह बने। वह बड़े उम्र स्वभाव के थे और सम्पादक के रूप में अपना दायित्व न निभा सके। इसके पश्चात सन् 1924 ई० में चौधरी शादीराम यात्री इसके सम्पादक बने ओर इसके बाद छोटूराम दलाल ने सम्पादक के काम को सम्भाला। छोटूराम दलाल भारम्भ में 'जाट गजट' के कातिब थे घोर वे इतनी योग्यता के पनी नहीं थे कि जातीय समाचारपत्र के सम्पादक बन सकें। परन्तु दलाल होने के कारण इनकी उपयोगिता समझी गई। क्योंकि चौधरी छोटूराम के चुनाव क्षेत्र में दलाल मोर महलावत जाटों के दो गोत्र उनके पक्के समर्थक थे शनं नंः छोटूराम दलाल की मृत्यु के उपरान्त जाट गजट के स्वामित्व के विषय में विवाद उठ खड़ा हुबा और व्यायालय से पौधरो धर्मसिंह, बी० एस–सी० एल० एल० बी० के पक्ष में निर्णय हुआ आजकल इसके सम्पादक ये ही हैं परन्तु अब इस समाचारपत्र की उपयोगिता मात्र शोधार्थियों के लिए ही रह गई है। जनता में यह समाचारपत्र सब प्रतीत के जाट जाति के गौरव से रूप में ही स्मरण किया जाता हैन कि समाचार जानने की दृष्टि से घाजकल जाट गजट चौधरीधर्मसिह साम्पलवाल के सम्पादकत्व में सिसक सिसक कर जीवन और मृत्यु से संघर्ष कर रहा है। यह समाचारपत्र अपने अतीतकाल में जाटों का प्रमुख वक्ता ओर प्रतिनिधि रहा है। विक्टर ह्य गो का यह कथन कि ''जो मनुष्य चुप हैं, मैं उनकी पुप्पी के कारणों का वकील गनूंगा। मैं गूंगों की वाणी बनूंगा, मैं छोटे से लेकर बड़े तक, निर्बल से लेकर सबल तक सभी की ओर से बोलूंगा मैं इनकी तुतलाहट व्याख्या करूंगा। मैं सभी निराश लोगों की तरफ से बोलूंगा। मैं भीड़ की बढ़बड़ाहट, कुलमुलाहट और गुनगुनाहट का दुभाषिया बनूंगा।'' 'जाट गजट' पर पूरा उतरता है। उपर्युक्त मान्यता को पुष्टि 'जाट गजट' के 10 दिसम्बर सन् 1916 के अंक से इस प्रकार होती है–''बहुत बड़ी संख्या में हिन्दू, मुसलमान और सिख जाट जाति से सम्बन्ध रखते हैं। हम इस प्रसवार को जाट जाति की सामाजिक आर्थिक और शैक्षणिक स्थिति के सुधार हेतु सरकार का ध्यान धाकर्षित करने का वाहन बनाना चाहते हैं और इसके द्वारा अपने राजनैतिक अधिकारों की प्राप्ति के लिए संघर्ष करना चाहते हैं।''

जाट गजट' वस्तुतः चौधरी छोटूराम के युग की जाटों के सम्बन्ध में पाई जानेवाली प्रत्येक स्थिति का ''महाभारत'' है। इसमें लिखी ''बेचारा जमींदार'' नामक लेखमाला ''गीता'' के समान है। जाट गजट' ने किसानों के उत्थान में बड़ा भारी योगदान किया है। इस समाचार पत्र ने सोई हुई देहाती जनता को उठाने का सशक्त अभियान छेड़ा। इसी अभियान के कारण सरकारी अधिकारियों को 'जाट गजट' के विषय में अनेक प्रकार की शंकाएं होने लगीं। जिला रोहतक के डिप्टी कमीशनर जमन मेंहदी खान ने सितम्बर 1921 में मुख्य सचिव पंजाब सरकार को एक पत्र लिखा। इस पत्र में जाट गजट के विषय में लिखते हुए कहा कि ''में धापको वास्तविक स्थिति से परिचित करना चाहता हूं। पापको मालूम है कि आजकल चौधरी छोटूराम की जमीदारा लीग और कांग्रेस में कोई धन्तर नहीं है। इनका समाचार पत्र 'जाट गजट' प्रायः कांग्रेस के समान ही सरकार के विरुद्ध प्रचार कर रहा है।'' सन् 1933 ई० तक भी सरकारी अधिकारियों की 'जाट गजट' के विषय में दुर्भावनाएं दूर नहीं हुई थी अपनी दुर्भावनाओं और सन्देहों को प्रकट करते हुए जिला रोहतक प्रशासन ने लिखा कि ''जाट जाति के उत्थान के लिए धारम्भ किया गया चौधरी छोटूराम की पार्टी का अखबार 'जाट गजट' बिना भेदभाव के सरकारी अधिकारियों पर आक्षेप करता है पोर यह अखवार प्रायः कांग्रेस रुझान का है।'''जाट गजट' केवल जिला रोहतक की सामान्य जनता में ही पढ़ा जाता रहा हो, ऐसी बात नहीं थी। प्रपितु यह समाचार पत्र सरकारीकार्यालयों एवं रेजिमेन्टल सेन्टर में भी जाता था अथवा दूसरे शब्दोंमें इसे इस प्रकार कह सकते हैं कि सरकार द्वारा तथा रेजिमेन्टल सेन्टरद्वारा इसको विज्ञापन एवं ग्राहकों के रूप में मार्थिक सहायता मिलती थी। सरकारी नीति भोर सरकारी अधिकारियों के विरुद्ध लिखने को दिया कि अखबार सरकारी विज्ञापनों एवं रेजिमेन्टल सेन्टर के लिएकारण जिला रोहतक के डिप्टी कमीशनर ने सरकार को यह सुझावकाली सूची में रखा जाए।

परन्तु किन्हीं अज्ञात कारणों से जिलाधीशकी यह योजना पूरी नहीं हो सकी। सन् 1933 ई० में सरकारी अधिकारियों ने पुनः एक प्रयास ''जाट गजट'' की बोलती बन्द करने के लिएकिया। इस योजना के अनुसार जाट गजट पर धारा 124–ए, तथाभारतीय दण्ड संहिता की धारा 153–ए के अधीन अभियोग लगानाथा। परन्तु यह योजना भी बाद में समाप्त हो गई।''जाट गजट'' में प्रकाशित होने वाले चौधरी छोटूराम के लेखोंके आधार पर जिलाधीश रोहतक ने सन् 1933 ई० में इस अखबार कोसाम्यवादी विचारों का प्रचारक तक माना था। इसमें कोई सन्देह नहींकि "जाट गजट" में प्रकाशित चौ० छोटूराम के अनेक लेखों को साम्यवादी विचारधारा की व्याख्या के रूप में लिया जा सकता है। जैसे"जाट गजट'' में साम्यवाद के प्रचार की पूर्वपीठिका, 'नौजवान'सभा के नेता कामरेड रामकिशन को उद्धृत करते हुए कहा गया था।"कि हम गोरे बनिये के स्थान पर काले बनिये का राज्य नहीं चाहते।हम चाहते हैं कि किसान और मजदूर ही भारत पर शासन करें।''सन् 1938 में चौधरी छोटूराम ने भी हू–ब–हू ऐसा ही नारा लगायाथा। जाट गजट में प्रकाशित ''बेचारा जमींदार'' नामक लेखमाला सेतो प्रधिकारियों को यह स्पष्ट झलकने लगा था कि चौधरी छोटूरामसाम्यवाद का प्रचार कर रहे हैं। क्योंकि चौधरी छोटूराम ने इस लेख–माला में अंग्रेजों के इस सिद्धान्त को कि ''भूमि का स्वामी राज्य औरउस पर खेती करने वाले व्यक्ति मुजायरे हैं'' का प्रतिवाद किया था ।जिलाधीश रोहतक ने तो इस लेखमाला में प्रचारित भूमि के सम्बन्धमें करों की असमानता को अंग्रेजों के प्रति असन्तोष फैलाने के सदृशमाना । श्रविकारियों का यह विचार था कि इस लेखमाला द्वाराचौधरी छोटूराम किसानों को सरकार के विरुद्ध भड़काकर बगावतकरवाना चाहते हैं। जिलाधीश ने 26 जुलाई तथा 30 अगस्त सन 1933 ई० में "जाट गजट' में छपे चौधरी छोटूराम के वक्तव्य को कि''पढ़े लिखे व्यक्तियों का यह दायित्व बनता है कि वे इस लेखमाला कोअपने अनपढ़ किसान साथियों को पढ़कर सुनायें'' बगावत की भूमिकाके रूप में ग्रहण किया। इसके साथ–साथ वे इस बात से भी चिन्तितथे कि यह अखवार बहुत बड़ी संख्या में जिला रोहतक के स्कूलों मेंजाता है प्रोर बच्चों के मनों में किसानों के प्रति जहां प्रेमकरेगा, वहां सरकार के प्रति घृणा का भाव जगाएगा। ''जाट गजट''में बाजार ठग्गी की सैर लेखमाला में 'पुलिस गंज' की सैर नामक लेखलिखकर पुलिस में फैले भ्रष्टाचार की घोर ध्यान प्राकषित किया ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि चौधरी छोटूराम के ''जाट गजट'' सेसरकारी अधिकारी कितने चिन्तित रहते थे। यह चिम्ता का विषय उससमय और भो अधिक बढ़ जाता था जब चौधरी छोटूराम किसानोंऔर मजदूरों की दर्दभरी कहानियों के आंमुग्रों में अपनी लेखनी कोभिगोकर लिखते थे। चौधरी छोटूराम की भाषा चुस्त और दुरुस्त थीऔर लिखने की शैली प्रभावात्मक होने के साथ जादूगरी ग्रसर डालतीथी। यदि हम यह कहें कि चौधरी छोटूराम कलम के धनी थे तो कोईप्रत्युक्ति नहीं होगी। यदि वे राजनीति में न आकर मात्र सम्पादक धोरलेखक के रूप में ही अपना व्यक्तित्व स्थापित करते तो यह निश्चयपूर्वककहा जा सकता है कि वे पत्रकारिता एवं लेखनी के क्षेत्र में बहुत सशक्तहस्ताक्षर छोड़ जाते। 'जाट गजट' चौधरी छोटूराम को कितना प्रियथा, इसकी एक झलक सन् 1932 ई० में उनके द्वारा प्रकाशित एकअपील से स्पष्ट होती है। इस अपील के तम अनुच्छेद में लिखा थाकि ''मैं उन लोगों को सूची रख रहा हूं, जिनको ''जाट गजट'' कीसहायता के लिए लिखा जारहा है। यदि वे इस प्रखबार की सहायतानहीं करेंगे तो भविष्य में मुझ से किसी भी प्रकार का अनुग्रह प्राप्तनहीं कर सकेंगे।

निष्कर्ष :–

चौधरी छोटूराम किसानों के सच्चे हितकारी थे। वे एक महान् चरित्रवान पत्रकार और नेता थे। उनमें उच्च–कोटि की राजनीतिक समझ, निश्च्छल राष्ट्रीय प्रेम, जाति, धर्म और क्षेत्र से कहीं ऊपर दृष्टिकोण मावनावादी था। किसानों प्रति उनके मन में विशेष करूणा थी। उनका व्यक्तित्व आकर्षक, दयावान और स्वच्छ व्यवहारी था। किसी युग पुरूष की पत्रकारिता पर शोध करना उस युग का सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक इतिहास का भी शोध करना होता है। चौधरी साहब बेखौप लेखक और निर्भिक वक्ता थे। वे जानते थे शिक्षा और ज्ञान ही किसान की दासता की बेड़ियों को तोड़ सकते है और इस बेरहम व्यवस्था से लड़ने के लिए समाचार–पत्र से अलावा कोई अन्य रास्ता नहीं है। हरियाणा के रोहतक से 1916 में उन्होंने 'जाट गजट' समाचार पत्र (उर्दू साप्तिाहिक) का प्रकाशन शुरू किया। चौधरी साहब निरतंर समाचार पत्र में 'ठग बाजार की

सैर' और 'बेचारा जमींदार' शीर्षक से लेख माला लिखते थे। उपरांत में चौधरी साहब ने इनको पुस्तक के रूप में प्रकाशित करवाया और 'जाट नौजवानों' के लिए जिदंगी से नुश्के, जाट संस्थाओं संबंधी समाचार एवं किसान वर्ग के संदेश भी छापते थे। वास्तव में जाट गजट समचार पत्र का संघर्ष ही चौधरी छोटूराम का जीवन संघर्ष रहा है। इसमें कोई दो राय नहीं की वे कुशल राजनीतिज्ञ के साथ–साथ उत्कृष्ट लेखक, संपादक और पत्रकार थे।

सदंर्भ ग्रन्थ सूची

1- चौधरी छोटूराम, सर छोटूराम राईटिंग एण्ड स्पीचिज हिस्ट्री एण्ड कल्चर संस्था खण्ड –2 छोटूराम ग्रंथ हरियाणा अकेडमी कुरुक्षेत्र।
2- चौधरी छोटूराम, सर छोटूराम राईटिंग एण्ड स्पीचिज हिस्ट्री एण्ड कल्चर संस्था खण्ड –5 छोटूराम ग्रंथ हरियाणा अकेडमी कुरुक्षेत्र।
3- सुमित सरकार, आधुनिक भारत (1885–1947) राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, (1992)।
4- विपिन चंद्र, आधुनिक भारत में विचारधारा और राजनीति (2000), अनामिक पब्लिशर्स नई दिल्ली।
5. घनश्याम शाह ''भारत में सामाजिक आंदोलन, सेज पब्लिकेन्स नई दिल्ली। 2009।
6- डॉ0 रणजीत सिह, छोटूराम–गौरवगाथा, छोटूराम पार्क–रोहतक द्वारा प्रकाशित और वेदव्रत आचार्य प्रिटिंग प्रेस गोहाना रोड़ रोहतक 1989।
7- डॉ0 रणजीत सिह, छोटूराम–गौरवगाथा, छोटूराम पार्क–रोहतक द्वारा प्रकाशित और वेदव्रत आचार्य प्रिटिंग प्रेस गोहाना रोड़ रोहतक 1989।
8- डॉ0 रणजीत सिह, छोटूराम–गौरवगाथा, छोटूराम पार्क–रोहतक द्वारा प्रकाशित और वेदव्रत आचार्य प्रिटिंग प्रेस गोहाना रोड़ रोहतक 1989।
9- रघुबीर सिहं शास्त्री, चौधरी जीवन चरित्र, सर छोटूराम मैमोरियल सोसाइटी रोहतक 1944।
10. चौधरी छोटूराम अनुवादक रणजीत सिहं, बेचारा जमींदार,, सर छोटूराम मैमोरियल सोसाइटी रोहतक 2005।
11- बलवीर सिहं, सर छोटूराम–5 मैन एंड हिज मशीन, सर छोटूराम मैमोरियल सोसाइटी रोहतक।